राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान

प्रस्तावना

राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान का वर्ष 2017-2018 का वार्षिक प्रतिवेदन एवं लेखा-परीक्षण प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुये मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है । इसमें वर्ष के दौरान संस्थान में सम्पन्न हुई गतिविधियों पर प्रकाश डाला गया है । वर्ष के दौरान संस्थान ने शिक्षण, प्रशिक्षण तथा रोगी परिचर्या गतिविधियों में उल्लेखनीय वृद्धि प्राप्ति की है । मानव जाति के कल्याण हेतु संस्थान का प्रचार-प्रसार, प्रगति, विकास तथा इसे समृद्ध बनाने हेतु श्रेष्ठ प्रयास किये गये हैं ।

मुझे यह सूचित करने में अत्यधिक प्रसन्नता हो रही है कि आयुष मंत्रालय, भारत-सरकार ने राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान के विस्तार केन्द्र के रूप में हरियाणा के पंचकुला में राष्ट्रीय आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा संस्थान स्थापित करने के लिए अनुमोदित किया है । संस्थान के इतिहास में यह एक मील का पत्थर है और गत चार दशकों और राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय इकाई के रूप में आयुर्वेदिक शिक्षा, प्रशिक्षण और रोगी देखभाल के क्षेत्र में इसकी विविध गतिविधियों को मान्यता प्रदान करता है । श्रीमाता मनसा देवी श्राइन बोर्ड, पंचकुला द्वारा 20 एकड़ भूमि संस्थान को लीज पर सौंप दी गई है ।

भारत-सरकार के जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय के एक उपक्रम मैसर्स वेपकोस लि. को प्रस्तावित संस्थान की स्थापना हेतु परियोजना प्रबंधन परामर्शक नियुक्त कर दिया गया है ।

मुझे यह प्रस्तुत करते हुए प्रसन्नता हो रही है कि आयुष मंत्रालय के अनुमोदन के साथ, संस्थान को मानद विश्वविद्यालय का दर्जा प्रदान करने हेतु मानव संसाधन विकास मंत्रालय के समक्ष आवेदन प्रस्तुत कर दिया गया है । इसी प्रकार, राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद के समक्ष आवेदन प्रस्तुत कर दिया गया है ।

संस्थान द्वारा 17-19 सितम्बर, 2018 को जयपुर में आयोजित आयुर्वेद, पंचकर्म और यूनानी पद्धतियों के लिए डब्ल्यूएचओ दस्तावेज बेंचमार्क की समीक्षा के लिए डब्ल्यूएचओ कार्यकारी समूह की बैठक आयोजित कर दायित्व पूरा किया गया। प्रत्येक दिन चार सत्र वाले इस 3 दिवसीय कार्यक्रम का आयोजिन आयुष मंत्रालय द्वारा किया गया था और संस्थान द्वारा समन्वित किया गया था । डब्ल्यूएचओ के अधिकारियों, विशेषज्ञों और 39 आयुर्वेद और यूनानी विशेषज्ञों ने 18 देशों का प्रतिनिधित्व करते हुये बैठक में भाग लिया ।

आयुष मंत्रालय द्वारा सहृदयता से आयुर्वेदाचार्य पाठ्यक्रम में प्रवेश क्षमता 92 से बढ़ाकर 100 सीटें कर दी है । संस्थान द्वारा एक वर्षीय पंचकर्म तकनीशियन पाठ्यक्रम प्रारंभ किया गया है । आयुर्वेदिक औषधीय पादप सामग्री का मानकीकरण, आयुर्वेद के माध्यम से सौंदर्य देखभाल, रसोई मसालों और स्थानीय पादपों के माध्यम से प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल, पाक कला के आयुर्वेदिक तरीके, बी.ए.एम.एस. डॉक्टर्स हेतु पंचकर्म प्रशिक्षण आदि 30 से 45 दिनों के लघु-अवधि प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम भी प्रारंभ किये गये हैं । आमजन एवं आयुर्वेदिक डॉक्टर्स का इनमें व्यापक आकर्षण हैं ।

विभिन्न शैक्षणिक पाठ्यक्रमों में मानव संसाधन विकास पर अपने कार्यक्रम के हिस्से के रूप में आयुर्वेदाचार्य के स्नातक पाठ्यक्रम में 84 सीटों पर प्रवेश दिये गये, आयुर्वेद-वाचस्पति/आयुर्वेद-धन्वन्तरि के स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में 104 सीटों पर प्रवेश किये गये, आयुष नर्सिंग एण्ड फार्मेसी डिप्लोमा पाठ्यक्रम में 30 सीटों पर तथा पंचकर्म परिचारक पाठ्यक्रम की 19 सीटों पर प्रवेश दिये गये। स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में नेपाल एवं श्रीलंका के अभ्यर्थियो को प्रवेश दिया गया। आयुष मंत्रालय द्वारा स्नातकोत्तर एवं पीएच.डी. अध्येताओं का 1-1-2016 से स्टाइपेंड बढ़ा दिया गया है ।

आलोच्य वर्ष के दौरान, ब्रींगिंग आब्जेक्टिविटी टू असेसमेन्ट वेरियबल्स फॉर रिसर्च इन आयुर्वेदिक स्कीन केयर विषयक कार्यशाला, स्ट्रेस मैनेजमेन्ट फॉर इन्टेलेक्चुअल्स एण्ड प्रोफेशनल्स विषयक कार्यशाला-सह-व्याख्यान, सिनोप्सिस राइटिंग विषयक कार्यशाला, कैंसर विषयक राष्ट्रीय कार्यशाला-सह-प्रशिक्षण कार्यक्रम, स्टेण्डर्डाइजेशन ऑफ उष्णादि गुण ऑफ पित्त विषयक कार्यशाला, महिला दिवस के अवसर पर व्याख्यान, शोध पद्धति, बेटी-बचाओ तथा अन्य दूसरे विषयों पर व्याख्यान आयोजित किये गये । रिसोर्स पर्सन्स एवं विशेषज्ञों ने उक्त क्षेत्रों में व्याख्यान एवं प्रस्तुतिकरण प्रस्तुत किये । इन आयोजनों में अध्यापकों एवं अध्येताओं ने बड़ी संख्या में भाग लिया ।

कई देश और विदेशी संगठन अपने प्रतिनिधियों को विभिन्न उद्देश्यार्थ संस्थान में भेजने में रुची ले रहे हैं । अफ्रीकी देशों के ड्रग नियामकों के 2 दलों ने संस्थान के कार्य को समझने और जानने के लिए संस्थान का दौरा किया । उन्हें शिक्षण, प्रशिक्षण, अनुसंधान, रोगी देखभाल गतिविधियों और औषध विनिर्माण प्रक्रिया आदि गतिविधियों का अवलोकन कराया गया । यह यात्रा भारत अफ्रीका शिखर सम्मेलन का हिस्सा थी और जो कि तीसरे भारत-अफ्रीका मंच सम्मेलन के दौरान भारत के माननीय प्रधानमंत्री द्वारा विचार किया गया था ।

कनाड़ा स्थित मॉन्ट्रियल विश्वविद्यालय के 2 डॉक्टरों के एक प्रतिनिधिमण्डल ने संस्थान के सहयोग से विश्वविद्यालय में आयुर्वेद पाठ्यक्रम प्रारम्भ करने की व्यवहार्यता ज्ञात करने के लिए संस्थान का दौरा किया और आयुर्वेद के विभिन्न विषयों पर विस्तृत वार्ता भी की गई । एक अन्य जर्मन अध्यापक ने आयुर्वेदिक शिक्षण, प्रशिक्षण, अनुसंधान इत्यादि को समझने के लिए संस्थान का दौरा किया । इसी प्रकार, आयुर्वेद की जागरुकता एवं लोकप्रियता के सृजन हेतु संस्थान के निदेशक एवं संकाय सदस्यों को विभिन्न देशों में नियुक्त किया गया । निदेशक को स्पेन एवं जर्मनी में नियुक्त किया गया था और तीन अध्यापकों को भी मिस्त्र, मंगोलिया और बैंकॉक में नियुक्त किया गया था ।

रोगी परिचर्या गतिविधियों के अपने कार्यक्रम में आलोच्य वर्ष के दौरान, बहिरंग विभाग में कुल 2,61,664 रोगियों की चिकित्सा की गई जिनमें 1,59,923 नवीन रोगी थे तथा अन्तरंग विभाग में कुल 67,848 रोगियों को चिकित्सा प्रदान की गयी जिनमें 4,680 नवीन रोगी थे । एस.सी.पी. तथा टी.एस.पी. स्कीम के तहत संस्थान राजस्थान के अनुसूचित जाति एवं जनजाति बहुल दर्जनभर जिलों में चल चिकित्सा शिविर भी नियमितरूप से आयोजित कर रहा है । जयपुर शहर में तथा इसके आस-पास के क्षेत्रों में चिकित्सा शिविरों के साथ स्वास्थ्य जागरुकता कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है । वर्ष के दौरान, 102 शिविर आयोजित किये जाकर 81,151 रोगियों को चिकित्सा प्रदान की गयी तथा नि:शुल्क औषधियाँ वितरित की गयी ।

संस्थान की जीएमपी सर्टिफाईड रसायनशाला, चिकित्सालयों तथा स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम तथा फैलोशिप प्रोग्राम की शोध गतिविधियों की आवश्यकता की पूर्ति हेतु आवश्यक औषधियों का निर्माण कर रही है । वर्ष के दौरान रू. 1,04,78,079/- की लागत से 293 प्रकार की विभिन्न औषधियों (48,427 कि.ग्रा.) का निर्माण किया गया जो कि पिछले वर्ष के उत्पादन से 7,057 कि.ग्रा. अधिक है । चिकित्सालय, शोध आदि की आवश्यकताओं की पूर्ति करने हेतु संस्थान प्रत्येक वर्ष उत्पादन बढ़ोतरी करने के सभी प्रयास करता रहा है। रसायनशाला 2 पारियों में चलाई जा रही है ।

पुस्तकालय में 28,000 पुस्तकें, 115 पत्र-पत्रिकायें, संदर्भ एवं अनुसंधान के उद्देशार्थ 2,616 जर्नल्स के वार्षिकांक उपलब्ध है । बुक-बैंक में 7,531 पुस्तकें हैं जो कि प्रत्येक छात्र को वरीयता-सह-आवश्यकता के आधार पर दी जाती है। पुस्तकालय में हर वर्ष नवीन पुस्तकें जर्नल्स आदि जोड़े जाते हैं । अध्यापकों तथा अध्येताओं हेतु सुगम एवं त्वरित संदर्भ के लिए सभी विभागों में विभागीय पुस्तकालय अवस्थित है । पुस्तकालय प्रबंधन प्रणाली के लिए आरएफआईडी ऑटोमेशन सोल्यूशन जल्द ही पुस्तकालय में स्थापित किया जा रहा है ।

नवीन बहिरंग रोगी विभाग के लिए चल रहा निर्माण कार्य प्रगति पर रहा। सम्पूर्ण परिसर में सीसीटीवी इंस्टॉलेशन, विडियो कोन्फ्रेसिंग, रिकोर्डिंग, ई-ऑफिस प्रोजेक्ट, छात्रों के लिए जिमनेजियम आदि कार्य प्रगति पर है ।

संस्थान स्नातक, स्नातकोत्तर एवं पीएच.डी. के अध्येताओं लिए संस्थान प्रांगण में 440 सीटोंयुक्त 6 छात्रावास उपलब्ध कराता है । छात्र एवं छात्राओं के लिए पृथक-पृथक छात्रावास की व्यवस्था है ।

आयुष मंत्रालय द्वारा संस्थान को प्रत्येक वर्ष विभिन्न मदों में व्यय हेतु आवश्यक अनुदान उपलब्ध करवाया जा रहा है । वर्ष के दौरान, मंत्रालय द्वारा रू. 7,141 लाख उपलब्ध कराये गये तथा वास्तविक व्यय रू. 7,532 लाख रहा ।

संस्थान अपनी ख्याति देश में ही नहीं अपितु अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी अर्जित कर सके व आयुर्वेद शिक्षा हेतु उत्कृष्ट केन्द्र के रूप में जाना जा सके इस हेतु संस्थान में आगामी वर्षों में निम्नलिखित गतिविधियों को किया जाना प्रस्तावित है :-

- डीम्ड विश्वविद्यालय का दर्जा प्राप्त करना । राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद से प्रमाणीकरण । इस हेतु आवेदन प्रस्तुत किये जा चुके हैं ।
- उत्कृष्टता केन्द्र की स्थापना ।
- डब्ल्यू.एच.ओ. कोलेबोरेशन सेन्टर की स्थापना ।
- राष्ट्रीय आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा संस्थान की स्थापना । इसकी प्रक्रिया प्रारम्भ कर दी गई है ।
- विदेशी चिकित्सकीय एवं गैर-चिकित्सकीय प्रोफेशनल्स हेतु आयुर्वेदिक एक्सपोज़र ट्रेनिंग प्रोग्राम को और सुदृढ़ बनाना।
- आयुर्वेद अध्ययन-अध्यापन, प्रशिक्षण, प्रकाशन, अनुसंधान, संकाय एवं छात्र विनिमय के क्षेत्र में विदेशों/संगठनों से परस्पर अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग करना ।
- राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठित जर्नल्स में उच्च प्रभाव वाले वैज्ञानिक अनुसंधानों का प्रकाशन ।
- उन्नत शिक्षण, प्रशिक्षण, रोगी देखभाल और उच्च प्रभाव अनुसंधान के लिए प्रतिष्ठित संस्थानों में उपलब्ध अत्याधुनिक सुविधाओं का उपयोग व संबद्ध विषयों के सर्वश्रेष्ठ ज्ञान का उपयोग करना ।
- विभिन्न विषयों पर राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों/सम्मेलनों का आयोजन करना ।
- ई-होस्पीटल सेवाओं तथा सुविधाओं को बढ़ावा देना ।
- आदिवासी चिकित्सालय में अन्तरंग रोगी विभाग सेवाऐं प्रारम्भ करना ।
- चिकित्सालय में उपचार की श्रेष्ठ पद्धतियाँ अपनाना एवं विशिष्ठ नैदानिक इकाइयाँ प्रारम्भ करना ।
- चिकित्सालय में अत्याधुनिक सुविधाओंयुक्त पंचकर्म एवं क्षारसूत्र इकाइयाँ खोलना ।
- आयुर्वेद के क्षेत्र में प्रायोगिक एवं नैदानिक डाटा का विशाल संग्रहण करना ।
- इस डाटा का विश्लेषण कर आगामी शोध हेतु प्रयुक्त कराना ।
- चिकित्सालय और अनुसंधान की सकल आवश्यकता को पूर्ण करने के लिए रसायनशाला में उत्पादन बढ़ाना ।
- उन्नत दवा परीक्षण और गुणवत्ता नियंत्रण प्रयोगशालाओं का शुभारंभ ।
- पीपीपी मॉडल पर उन्नत नैदानिक प्रयोगशाला प्रारम्भ करना ।
- चिकित्सालय सेवाओं में विस्तार के लिए प्रांगण में एक बहुमंजिला चिकित्सालय परिसर बनाया जा रहा है।

- पुराने सिटी होस्पीटल को सभी सेवाओं के साथ एक विश्व स्तरीय चिकित्सालय के लिए पुनर्निर्मित किया जाएगा ।
- विदेशी छात्रों हेतु छात्रावास एवं अतिथिगृहों का निर्माण ।

इन सभी सेवाओं, सुविधाओं, राष्ट्रीय स्तरीय संस्थान के योग्य बुनियादी ढ़ाँचे के साथ, संस्थान आयुष-मंत्रालय द्वारा तय किये गये उद्देश्यों की प्राप्ति की ओर अग्रसर हो रहा है विशेषरूप से शिक्षा, प्रशिक्षण तथा रोगी परिचर्यात्मक गतिविधियों का प्रौन्नयन आयुर्वेद को विश्व में चिकित्सा की सशक्त पद्धति के रूप में स्थापित करने की दिशा में कार्यरत है ।

इन विनम्र शब्दों के साथ, मैं, राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान के वित्तीय वर्ष 2017-2018 के वार्षिक प्रतिवेदन और अंकेक्षित लेखा विवरण प्राधिकारियों के समक्ष प्रस्तुत करता हूँ ।

प्रो. संजीव शर्मा
निदेशक